Q No 02अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत (Theory of Comparative Advantage in International Trade)

डेविड रिकार्डो का तुलनात्मक लाभ सिद्धांत

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार (International Trade) विश्व अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। कोई भी देश अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं नहीं कर सकता क्योंकि प्रत्येक देश के प्राकृतिक संसाधन, जलवायु, श्रम, पूँजी, तकनीक तथा उत्पादन क्षमता एक-दूसरे से भिन्न होती है। इसी कारण देशों के बीच वस्तुओं एवं सेवाओं का आयात-निर्यात आवश्यक हो जाता है।

प्राचीन समय से ही विभिन्न देशों के बीच व्यापार होता रहा है, परन्तु आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांतों का वैज्ञानिक विकास शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों ने किया। David Ricardo ने 1817 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Principles of Political Economy and Taxation में तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत प्रस्तुत किया। यह सिद्धांत आज भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत माना जाता है।

रिकार्डो ने यह सिद्ध किया कि यदि एक देश सभी वस्तुओं के उत्पादन में दूसरे देश से अधिक सक्षम हो, तब भी दोनों देशों के बीच व्यापार से लाभ प्राप्त किया जा सकता है। व्यापार का आधार निरपेक्ष लागत नहीं बल्कि तुलनात्मक लागत (Comparative Cost) होती है। प्रत्येक देश को उसी वस्तु का उत्पादन करना चाहिए जिसमें उसकी अवसर लागत (Opportunity Cost) सबसे कम हो।

तुलनात्मक लाभ का अर्थ (Meaning of Comparative Advantage)

तुलनात्मक लाभ का अर्थ है कि कोई देश उस वस्तु के उत्पादन में विशेषज्ञता प्राप्त करे, जिसमें वह अन्य वस्तुओं की तुलना में कम त्याग (Opportunity Cost) करता हो। अर्थात उत्पादन का निर्णय इस आधार पर लिया जाए कि किस वस्तु का उत्पादन करने में कम अवसर लागत आती है।

उदाहरण के लिए यदि भारत कपड़ा और गेहूँ दोनों का उत्पादन कर सकता है, परन्तु कपड़ा बनाने में उसकी अवसर लागत कम है, तो भारत को कपड़ा उत्पादन में विशेषज्ञता प्राप्त करनी चाहिए तथा गेहूँ का आयात करना चाहिए। इसी प्रकार दूसरा देश गेहूँ में विशेषज्ञता प्राप्त करेगा। इस प्रकार दोनों देशों को व्यापार से लाभ प्राप्त होगा।

परिभाषा (Definition)

"प्रत्येक देश को उस वस्तु का उत्पादन एवं निर्यात करना चाहिए जिसमें उसे तुलनात्मक लाभ प्राप्त हो तथा जिस वस्तु में तुलनात्मक हानि हो उसका आयात करना चाहिए।"

दूसरे शब्दों में, उत्पादन का आधार सापेक्ष लागत (Relative Cost) होना चाहिए, न कि केवल वास्तविक लागत।

सिद्धांत की व्याख्या (Explanation of the Theory)

मान लीजिए दो देश–भारत और इंग्लैंड–तथा दो वस्तुएँ–कपड़ा और शराब–हैं।

देश

कपड़ा (श्रम-घंटे)

शराब (श्रम-घंटे)

भारत

10

20

इंग्लैंड

15

10

भारत कपड़ा उत्पादन में तुलनात्मक लाभ रखता है क्योंकि कपड़ा बनाने में उसकी अवसर लागत कम है। इंग्लैंड शराब उत्पादन में तुलनात्मक लाभ रखता है।

यदि दोनों देश अपनी-अपनी तुलनात्मक लाभ वाली वस्तुओं का उत्पादन करें और उनका आपसी व्यापार करें, तो–

कुल उत्पादन बढ़ेगा।

दोनों देशों को सस्ती वस्तुएँ प्राप्त होंगी।

संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग होगा।

दोनों देशों की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी।

इसी को विशेषीकरण (Specialization) कहा जाता है।

सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ

- यह सिद्धांत सापेक्ष लागत पर आधारित है।
- यह विशेषज्ञता को प्रोत्साहित करता है।
- यह मुक्त व्यापार का समर्थन करता है।
- यह विश्व उत्पादन में वृद्धि करता है।
- यह संसाधनों के कुशल उपयोग पर बल देता है।
- यह दोनों देशों को लाभकारी व्यापार का आधार प्रदान करता है।
- यह आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांतों की नींव है।

तुलनात्मक लाभ सिद्धांत की मान्यताएँ (Assumptions)

- केवल दो देश और दो वस्तुएँ हैं।
- श्रम ही उत्पादन का एकमात्र साधन है।
- श्रम समान दक्षता वाला है।
- उत्पादन लागत केवल श्रम-घंटों से मापी जाती है।
- तकनीक स्थिर रहती है।
- पूर्ण प्रतियोगिता विद्यमान है।
- संसाधनों का पूर्ण रोजगार है।
- परिवहन लागत शून्य है।
- व्यापार पर कोई सरकारी प्रतिबंध नहीं है।
- उत्पादन के साधन देशों के बीच गतिशील नहीं हैं।
- उत्पादन में स्थिर प्रतिफल प्राप्त होते हैं।
- व्यापार संतुलित रहता है।
- मुद्रा विनिमय दर स्थिर रहती है।
- उपभोक्ताओं की पसंद स्थिर रहती है।

सिद्धांत के लाभ एवं महत्व (Advantages and Importance)

(1) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा

यह सिद्धांत सिद्ध करता है कि व्यापार दोनों देशों के लिए लाभदायक है।

(2) विशेषज्ञता का विकास

देश अपनी दक्षता के अनुसार उत्पादन करते हैं जिससे उत्पादकता बढ़ती है।

(3) संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग

भूमि, श्रम और पूँजी का अधिक प्रभावी उपयोग होता है।

(4) विश्व उत्पादन में वृद्धि

विशेषज्ञता से कुल उत्पादन बढ़ता है।

(5) राष्ट्रीय आय में वृद्धि

निर्यात बढ़ने से आय और विदेशी मुद्रा अर्जित होती है।

(6) रोजगार के अवसरों में वृद्धि

उद्योगों का विस्तार होने से रोजगार बढ़ता है।

(7) उपभोक्ताओं को लाभ

बेहतर गुणवत्ता की वस्तुएँ कम कीमत पर उपलब्ध होती हैं।

(8) तकनीकी विकास

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा से नई तकनीकों का विकास होता है।

(9) आर्थिक विकास

उत्पादन, निवेश और आय में वृद्धि से आर्थिक विकास तेज होता है।

(10) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

देशों के बीच आर्थिक एवं राजनीतिक संबंध मजबूत होते हैं।

सिद्धांत की सीमाएँ (Limitations)

- केवल श्रम को उत्पादन का साधन मानना अवास्तविक है।
- परिवहन लागत की उपेक्षा की गई है।
- तकनीकी परिवर्तन को नहीं माना गया।
- पूर्ण प्रतियोगिता वास्तविक जीवन में नहीं होती।
- पूर्ण रोजगार की मान्यता अव्यावहारिक है।
- सरकारी हस्तक्षेप, शुल्क एवं कोटा की उपेक्षा की गई है।
- विनिमय दर में परिवर्तन को शामिल नहीं किया गया।
- पूँजी और तकनीक के अंतर्राष्ट्रीय प्रवाह को नहीं माना गया।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका की उपेक्षा की गई है।
- विकासशील देशों की वास्तविक समस्याओं का पर्याप्त विश्लेषण नहीं किया गया।
- सेवाओं एवं डिजिटल व्यापार जैसे आधुनिक क्षेत्रों को यह सिद्धांत पूरी तरह नहीं समझाता।
- पर्यावरणीय प्रभावों की भी इसमें चर्चा नहीं की गई।

सिद्धांत की आलोचना (Criticism)

- यह सिद्धांत अत्यधिक काल्पनिक मान्यताओं पर आधारित है।
- वास्तविक जीवन में उत्पादन अनेक कारकों पर निर्भर करता है, केवल श्रम पर नहीं।
- आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था में तकनीक, पूँजी, नवाचार और सेवाओं का महत्व अधिक है।
- व्यापारिक नीतियाँ, मुक्त व्यापार समझौते तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ इसकी सरल मान्यताओं से कहीं अधिक जटिल हैं।
- इसलिए यह सिद्धांत आज भी महत्वपूर्ण है, लेकिन इसे आधुनिक परिस्थितियों के अनुसार अन्य सिद्धांतों के साथ समझना आवश्यक है।

आधुनिक समय में प्रासंगिकता (Relevance in the Modern Era)

आज के वैश्वीकरण (Globalization) के दौर में तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक है। भारत सूचना प्रौद्योगिकी (IT), औषधि (Pharmaceuticals), वस्त्र, कृषि उत्पाद और सेवा क्षेत्र में अपनी तुलनात्मक क्षमता का लाभ उठाकर विश्व के अनेक देशों को निर्यात करता है। इसी प्रकार अन्य देश अपनी विशेष दक्षताओं के अनुसार वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात करते हैं। World Trade Organization> जैसे वैश्विक संस्थानों ने भी तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत को व्यवहार में बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष (Conclusion)

तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आधारभूत एवं सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्धांत है। यह सिद्ध करता है कि व्यापार केवल उन देशों के लिए ही लाभदायक नहीं है जिनके पास निरपेक्ष लाभ है, बल्कि उन देशों के लिए भी लाभकारी है जिनके पास केवल तुलनात्मक लाभ है। यह सिद्धांत विशेषज्ञता, संसाधनों के कुशल उपयोग, उत्पादन वृद्धि, राष्ट्रीय आय, रोजगार और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करता है। यद्यपि इसकी कई मान्यताएँ अव्यावहारिक हैं और आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था में इसकी कुछ सीमाएँ हैं, फिर भी यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के अध्ययन और नीति-निर्माण की आधारशिला बना हुआ है।